

372वाँ
सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

वर्ष 31

द्वादश अंक

जुलाई

2009

इस अंक में

- | | |
|---|---|
| 2069 सम्पादकीय | 2157 (ii) एस. एस. सी. कर सहायक परीक्षा, 2008 |
| 2070 राष्ट्रीय घटनाक्रम | 2162 (iii) सिविल सर्विसेज (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2009 |
| 2082 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम | 2174 उद्योग व्यापार जगत् |
| 2086 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य | 2176 कृषि विज्ञान—आगामी एम. एस.सी. (कृषि) प्रवेश परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न |
| 2091 नवीनतम सामान्य ज्ञान | 2179 ऐच्छिक विषय—(i) भारतीय इतिहास—सिविल सर्विसेज (प्रा.) परीक्षा, 2009 |
| 2099 आईपीएल-II का खिताब डेक्कन चार्जर्स के नाम | 2189 (ii) राजनीति विज्ञान—सिविल सर्विसेज (प्रा.) परीक्षा, 2009 |
| 2102 खेलकूद | 2201 (iii) हिन्दी—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न |
| 2104 रोजगार समाचार | 2209 विविध तथ्य एवं सामान्य जानकारी—(i) उत्तर प्रदेश ग्रामीण विकास योजनाएं |
| 2107 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी | 2211 (ii) वाणिज्य एवं उद्योग क्षेत्र में प्रगति—एक झलक |
| 2110 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं | 2214 तर्कशक्ति परीक्षा—केनरा बैंक (पी. ओ.) परीक्षा, 2009 |
| 2117 स्मरणीय तथ्य | 2221 संख्यात्मक अभियोग्यता—यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक (पी. ओ.) परीक्षा, 2009 |
| 2119 विश्व परिदृश्य | 2226 क्या आप जानते हैं ? |
| 2121 आर्थिक लेख—(i) भारत में बजटीय व्यवस्था का स्वरूप | 2227 अपना ज्ञान बढ़ाइए |
| 2124 (ii) शेयर बाजार से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारीयों | 2229 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—विश्व सम्बन्धों में रूस का बढ़ता हुआ प्रभाव |
| 2126 सामयिक आर्थिक लेख—जी-20 सम्मेलन में सम्भावनाएं और भावी परिणाम | 2231 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—362 का परिणाम |
| 2132 सांस्कृतिक लेख—भारतीय संस्कृति और पर्यावरण (संवर्द्धन एवं संरक्षण) | 2232 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—133 |
| 2133 समसामयिक लेख—(i) राष्ट्रपति की स्पेन तथा पोलैण्ड की यात्रा | 2235 English Language—Indian Overseas Bank (P.O.) Exam., 2009 |
| 2137 (ii) भारत-श्रीलंका सम्बन्ध : एक विश्लेषण | |
| 2141 सार संग्रह | |
| 2144 सामान्य अध्ययन—सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, 2008 | |
| 2154 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) इण्डियन ओवरसीज बैंक (पी.ओ.) परीक्षा, 2009 | |

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

कलात्मक जीवन जीना सीखिए

कला, सौन्दर्य अथवा सुन्दरम् की अभिव्यक्ति का माध्यम है. आचरण में सुन्दरम् की अभिव्यक्ति शिवम् अथवा लोक कल्याण है. इसी मौलिकता को लक्ष्य करके विद्वानों ने अनेक प्रकार से कला को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है. उनके सारांश स्वरूप हम कह सकते हैं कि 'कला, कलाकार के आनन्द की श्रेय और प्रेय तथा आदर्श और यथार्थ को समन्वित करने वाली प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति है.' अपने जीवन को कलात्मक बनाने के लिए हमें चाहिए कि हम प्रिय बोलें और प्रिय करें, हम सर्वप्रिय बन जाएंगे. यह सर्वप्रियता ही प्रेयस और श्रेयस का सामंजस्य एवं कलात्मक जीवन का रहस्य है.

हमने जन्म क्यों लिया है, हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, उस उद्देश्य की पूर्ति हम किस प्रकार कर सकते हैं, आदि प्रश्न प्रत्येक जागरूक व्यक्ति के मन में प्रायः उठते रहते हैं. प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से, अपने विकास स्तर के अनुरूप इन प्रश्नों के उत्तर स्वयं देकर अथवा उन्हें अन्यत्र प्राप्त करके, अपना समाधान करता रहता है, परन्तु एक बात में सब सहमत दिखाई देते हैं कि हम वे काम करें, जिनके कारण समाज हमारा सम्मान करे, हमारी याद करे.

प्राचीन भग्नावशेषों एवं चट्टानों पर अंकित चिह्न रूप आलेख बताते हैं कि प्रकृति नित्य नए प्रयोगों द्वारा नवीन एवं श्रेष्ठतर सृजन में तत्पर बनी रहती है. विश्व-विकास की कहानी प्रयोग और प्रगति के पथ पर पग-पग पर अंकित है. मानव भी इसी पथ का पथिक है, जो है, उससे न तो वह सन्तुष्ट रहना चाहता है और न उसमें वह अपने आपको सीमित ही रखना चाहता है. नवीन एवं श्रेष्ठतर सर्जना की ललक उसके जीवन की मूल प्रेरणा रहती है. असन्तोष, प्रगति है और नवीन सर्जना, प्रगति का पर्यायवाची है. नवीन सर्जना ही कला है. तभी तो महेश्वर को सबसे बड़ा कलाकार कहा गया है—विश्व, यह दृश्यमान जगत् उसी की कला है. आत्मा निरन्तर विकासशील रहकर नित्य नवीन एवं श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर अनुभूति की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहती है.

जीवविज्ञान और मनोविज्ञान के विद्यार्थी बताते हैं कि प्राणियों की ऊर्जा, प्रजनन एवं आत्मरक्षा नामक दो मूल वृत्तियों की सन्तुष्टि में निश्शेष हो जाती है. केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसके पास इन दो वृत्तियों की सन्तुष्टि के उपरान्त भी कुछ ऊर्जा शेष बच रहती है. इस अतिरिक्त ऊर्जा को प्रतिभा, रचनात्मक शक्ति, सौन्दर्यानुभूति आदि नामों द्वारा अभिहित किया जाता है. इसी के द्वारा मानव लोक-परलोक की नाप-जोख, विज्ञान के शोध-कार्य, कलाकृतियों